संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : ४६ ● १५ दिसम्बर, २०१५ मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2015
सिडनी–आस्ट्रेलिया सफलतापूर्वक सम्पन्न

वेदज्ञान सम्पूर्ण मानव जाति को एक सूत्र में बांधने का संदेश देता है–

देवेन्द्रपाल वर्मा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २०१५, सिडनी-आस्ट्रेलिया का रविवार २६ नवम्बर २०१५ को समापन हो गया। यह महा सम्मेलन पूर्णतः सफल रहा। यह सम्मेलन विदेश में इस वर्ष सम्पन्न हुए सभी सम्मेलनों से उत्तम व महत्वपूर्ण था। सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा आस्ट्रेलिया के अन्तर्गत गठित संचालन समिति द्वारा आयोजित किया गया था।

आर्य समाज केन्द्र, ६६ शानेपार्क रोड़, शाने पार्क के निकट स्थान पर आयोजित किया गया। इस महासम्मेलन के लिए ८०० प्रतिनिधियों ने अपना पंजीकरण कराया जिसमें से अधिकांश प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में भाग लिया। सिडनी का यह आर्य समाज केन्द्र ५ एकड़ भूभाग में फैला हुआ है जहां एक विस्तृत भवन में दो व्याख्यान कक्ष तथा एक बड़े मण्डप सहित सभी आवश्यक सुविधायें उपलब्ध है। सम्मेलन में भारत, मारीशस, सिंगापुर, अमेरिका, सूरीनाम, फिजी, न्यूजीलैंड, इंग्लैंड, नेपाल एवं आस्ट्रेलिया के सभी प्रांतों से प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

आयोजन में विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न हुए। कार्यक्रम योग प्रशिक्षण से आरम्भ होता था जिसके बाद यज्ञ होता था। यज्ञ के बाद विभिन्न वैदिक विषयों पर उपदेश होते थे। इनमें से कुछ विषय थे- दिव्य होने के कुछ उपाय व इनका महत्व, वेदों में स्त्रियों की स्थिति, वैदिक दैनन्दिन जीवन, युवा सम्मेलन, भजन, ईश्वर विषयक वैदिक सिद्धान्त, तर्कसंगत वैदिक दृष्टिकोण, पुनर्जन्म एवं कर्म फल सिद्धान्त, समाज में अपराध समाप्त करने व शांति में वृद्धि करने के वैदिक समाधान, वैदिक मूल्य जिनसे परिवार आदर्श बनता है, वैदिक धर्म- वैश्विक मानवीय दृष्टिकोण, वैदिक संध्या, स्वस्थ जीवन और वेद, अग्निहोत्र एवं मंत्रोच्चार के वैज्ञानिक पक्ष व इससे लाभ, वेदों में विज्ञान, विभिन्न विषयों पर उपदेशों का विशेषज्ञों द्वारा समीक्षा, दक्षिण प्रशांत महासागरीय देशों में आर्य समाज का भविष्य आदि।

महासम्मेलन में भाग लेने वाले प्रमुख लोगो में सर्वश्री श्री सत्यपाल सिंह, सांसद, श्री विनय आर्य मंत्री, दिल्ली सभा, श्री सुरेश अग्रवाल-प्रधान, गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री देवेन्द्रपाल वर्मा-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., डा. सतीश प्रकाश, पं. गुरूदत्त, प्रियंका शर्मा, प्रकाश आर्य, विनय आर्य, योगेश कुमार आचार्य, सनत कुमार, आचार्य आशीष आदि थे। बड़ी संख्या में समाज के स्वयंसेवकों ने अतिथियों का प्रशंसनीय रीति से स्वागत सत्कार किया। अतिथियों को नाना प्रकार का स्वादिष्ट भोजन कराया गया। इस आयोजन में व्यवस्था व अतिथि सत्कार का एक नया उत्कृष्ट मानदण्ड स्थापित किया गया।

स्वास्थ्य व चिकित्सकीय सुविधाए भी उपलब्ध थी। प्रत्येक प्रतिनिधि को बैज व टैग दिया गया था। महासम्मेलन से कुछ माह पहले ही प्रतिनिधियों का पंजीकरण आरम्भ कर दिया गया था। इस कारण बहुत बड़ी संख्या में लोगों ने पंजीकरण कराया और सम्मेलन में भाग लिया। सभी पंजीकृत प्रतिनिधियों को महासम्मेलन में भाग लेने संबंधी प्रमाण पत्र भी प्रदान किया गया।

सम्मेलन में जन समूह को सम्बोधित करते हुए श्री देवेन्द्र पाल वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. ने कहा कि आदि सृष्टि में मानव की उत्पत्ति के साथ ही सकल सृष्टि के कल्याण के लिए परमात्मा ने वेद का अलौकिक ज्ञान हमें दिया। वेद ज्ञान किसी वर्ग विशेष के लिए नही सकल मानवों के लिए है वेद अपौरूषेय ज्ञान है। वेद ने कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का आदेश देकर सम्पूर्ण मानव जाति को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनने व बनाने का संदेश दिया है। कालान्तर में समय-समय पर आये विशिष्ट विद्वानों ने अपने अपने विचार मानव के कल्याण के लिए दिये। वह ज्ञान पौरूषेय है जो काल के अनुरूप है, उनके विचारों के आधार पर ही विशेष मत मतान्तर व सम्प्रदायों का जन्म हुआ। जिनके माध्यम से वर्ग भेद आदि पनपने लगे और वे अन्ततः विश्व के एकत्व में बाधक बनने लगे। महाभारत काल के बाद वेद ज्ञान लुप्त प्राय सा हो गया। अनेक देश भारत वर्ष सहित पराधीन हुए। भारत की पराधीनता काल में महर्षि स्वामी दयानन्द का उदय हुआ। उन्होंने पराधीनता के मूल में वेद ज्ञान का विलुप्त होना बताया और वेदों की ओर लौटो का नारा दिया। वेद ज्ञान का प्रचार बढ़ा, जन जागृति होने लगी सभी स्वतंत्रता के महत्व को समझने लगे। महर्षि ने १८७५ में आर्य समाज की स्थापना की उसके माध्यम से वेद का ज्ञान बढ़ने लगा। आज सारे विश्व में आर्य समाज का गौरव फैल रहा है।

आज हम सभी आस्ट्रेलिया के सिडनी शहर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेकर अपने आप को आनन्दित अनुभव कर रहे हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने सारे विश्व में वैदिक संस्कृति के प्रसार के लिए विभिन्न देशों में आर्य महासम्मेलन किये जाने का निश्चय किया उसी निश्चय के आधार पर ही आज हम सभी सिडनी में उपस्थित होकर महर्षि के मंतव्यों के प्रचार प्रसार में संलग्न है। अगला अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल में वर्ष २०१६ में होगा। हम सभी संकल्प लेकर यहां से जाये कि हम अपने अंतिम श्वास तक विश्व में सर्वत्र एकत्व और ममत्व के संस्थापन एवं सम्पूर्ण मानव जाति को सच्चा मानव बनने का वेद संदेश आर्य समाज की छत्रछाया में एकजुट होकर घर घर पहुँचाने में प्रतिबद्ध रहेंगे।

सिडनी पर्यटकों के भ्रमण के लिए सुन्दरता की दृष्टि से विश्व का प्रमुख स्थान है। यहां का मौसम अगस्त से अप्रैल के मध्य के गर्म दिनों में प्रायः बहुत ही सुहावना होता है। यहां अधिक ठण्ड नहीं होती इसलिए पर्यटक पूरे वर्ष भर यहां भ्रमण के लिए आ सकते है।

अगला अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २०१६ में नेपाल में होगा। मैं आशा करता हूँ कि वहां भी मुझे अनेक आर्यजनों के दर्शनों का सौभाग्य मिलेगा।

अन्तरंगाधिवेशन सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ की आगामी अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक ०३ जनवरी, २०१६ दिन-रविवार को प्रातः ११:०० बजे से सभा प्रधान-श्री देवेन्द्रपाल वर्मा की अध्यक्षता में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ में होना सुनिश्चित हुआ है। सभी पदाधिकारी, अन्तरंग सदस्य व विशिष्ट सदस्यगण समय से पहुंच कर अन्तरंग को सफल बनाने में सहयोग दें।

अन्तरंग सभा का (एजेण्डा) विषय सूची पृथक डाक से सभी को भेज दिया गया है।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

अशासकीय सहायता प्राप्त प्रबन्धकों की बैठक

लखनऊ-अशासकीय सहायता प्राप्त प्रबन्धक महा सभा उ.प्र. के तत्वावधान में आगामी ५ जनवरी, २०१६ को भव्य समारोह में नवनियुक्त मा. शिक्षा मंत्री श्री बलराम यादव का अभिनन्दन समारोह का आयोजन दोपहर १२ बजे स्थानीय महाराजा अग्रसेन इण्टर कालेज, मोतीनगर, लखनऊ में होना निश्चित हुआ है। सभी अशासकीय सहायता प्राप्त प्रबन्धकों से निवेदन है कि इस कार्यक्रम को पूर्णरूप से सफल बनाने में सहयोग प्रदान करें आपकी उपस्थिति से संगठन शक्ति का प्रदर्शन एवं प्रबन्धकों की रोजमर्रा की जटिल समस्याओं का निवारण हेतु महासभा दृढ़ संकल्प है।

देवेन्द्रपाल वर्मा संरक्षक | **डॉ. अशोक बाजपेई** अध्यक्ष | **अनिल अग्रवाल** महामंत्री | **अरविन्द कुमार** कार्यवाहक

देवेन्द्रपाल वर्मा प्रधान/संरक्षक
स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती मंत्री/प्रधान सम्पादक
आचार्य वेदव्रत अवस्थी सम्पादक

सम्पादकीय.....

कांग्रेस पार्टी के नेता पार्टी की गरिमा को ठेस पहुँचा रहे हैं इसमें देश की भलाई नहीं है।

कांग्रेस पार्टी निर्वाचन में अपनी पराजय और भारतीय जनता पार्टी की जीत से तिलमिला गयी और आज तक वह तिलमिलाहट नहीं समाप्त हुई जिससे पार्टी अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी उपाध्यक्ष श्री राहुल गांधी तथा कई उनके साथी केन्द्र सरकार और प्रधानमंत्री मोदी के विरूद्ध अनेक अनर्गल विषयवस्तु से रहित बयान देकर राजनीति पुरूष बने रहना चाहते हैं।

भारत के स्वाधीनता आन्दोलन के समय केवल देश में कांग्रेस व कम्यूनिस्ट पार्टी थी। कांग्रेस निस्पृह रूप में पूज्य महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वाधीनता आन्दोलन चला रही थी। प्रच्छन्न रूप में कम्युनिष्ट पार्टी अंग्रेजी सरकार को सहयोग कर रही थी। कांग्रेस के नेतृत्व में देशवासियों ने भरपूर भाग लेकर देश को स्वतंत्र कराया। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू बने। उनका शासन १८ वर्ष तक चला और देश ने काफी प्रगति की। उनका निधन चीन की धोखेबाजी के दुख में हुआ। उनके निधन के बाद श्री लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री बने। १८ मास तक देश का सफल नेतृत्व किया उनका निधन रूस में भारत पाकिस्तान विवाद की वार्ता के मध्य हुआ जो आज तक रहस्य की चादर में ढका है। परंतु दोनों के ही प्रधानमंत्रित्व काल में संसद की गरिमा पूरी तरह से सुरक्षित रही। संसद में पक्ष विपक्ष में सार्थक बहसे होती थी और देश उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर बढ़ता रहा। शास्त्री जी के बाद श्रीमती इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री बनी और उन्होंने देश के सम्बर्द्धन में अपनी शक्ति लगाई परंतु उनमें अधिनायकवाद का दोष उपजने लगा और राजनीतिक शुचिता बिगड़ने लगी। निर्वाचन में उनकी पराजय हुई अपनी पराजय से उन्होंने आत्म मंथन करके अपनी क्रिया पद्धति ठीक भी करने का यत्न किया परंतु कांग्रेस की देश की जनता की प्रियता में कमी आने लगी फिर क्रमशः विभिन्न राजनीतिक दलों का उदय होने लगा और सभी दल अपने अपने स्वत्य को बनाने में लगने लगे।देश हित यही से गौण होने लगा। कांग्रेस की सर्वमान्यता विलुप्त सी हो गयी फिर भी वह एक शीर्ष राजनीतिक दल के रूप में सक्रिय रही और पुनः सत्ता में अपना स्थान बना लिया। राजीव गांधी के प्रधानमंत्रित्व काल में तथाकथित घोटाले से कांग्रेस की गरिमा में आंच आई उनके बाद श्रीमती सोनिया गांधी ने सत्तासीन होने का प्रयत्न किया तो उनकी विदेशी नागरिकता के कारण उन्हें सत्ता में स्थान नहीं दिया गया। परंतु उनकी महत्वाकांक्षा बढ़ती ही गयी। कांग्रेस अध्यक्ष बनायी गयी और प्रच्छन्न रूप में सत्ता पर हावी हो गयी तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह उनके निर्देशों पर ही सरकार चलाते रहे। बाद में कांग्रेस पार्टी को अपनी जेबी पार्टी ही बना ली। अपने पुत्र राहुल गांधी को कांग्रेस का उपाध्यक्ष बनाकर उन्हें सत्ता शीर्ष पर बैठाने की योजना बनायी। पार्टी में सोनिया समर्थकों का बाहुल्य हो गया। देश की जनता ने कांग्रेस की दुरवस्था का आकलन करके विगत निर्वाचन में कांग्रेस को सत्ता विहीन बनाया।

देश में जन सामान्य को आशा तो यह थी कि सोनिया जी और राहुल जी इस पराजय के कारणों पर गंभीर मंथन करके देश के गौरव को बढ़ाने में प्रयत्नशील होंगे परंतु उन्होंने ऐसा न करके श्री नरेन्द्र मोदी के और उनकी सरकार के विरूद्ध अनर्गल बयानबाजी करके अपनी खीझ मिटा रहे हैं। संसद की कार्यवाही बिला वजह बाधित कर रहे हैं। फलतः देश का करोड़ों रूपया बर्बाद हो रहा है देश हितैषी कार्य अवरूद्ध हो रहे है। कांग्रेस के वयोवृद्ध नेता वर्तमान कांग्रेस की दिशा दशा संवारने के लिए वर्तमान कांग्रेस नेतृत्व को मार्गदर्शन देने की कृपा करें। अन्यथा यही अवस्था रही तो कांग्रेस का सम्पूर्ण गौरव समाप्त हो जायेगा और देश में उसका कोई नामलेवा भी नहीं रहेगा। पहले भी मैंने इसी कालम में श्रीमती सोनिया गांधी एवं श्री राहुल गांधी को खीझभरे बयानों के स्थान पर पराजय के कारणों पर गंभीर मंथन करने की सलाह दी है। पुनः सोनिया गांधी और राहुल गांधी से अनुरोध है कि कांग्रेस के विगत गौरव की संरक्षा के लिए पराजय के कारणों पर आत्ममंथन करके उन कारणों को दूर करने के लिए अपना अहंकार छोड़कर प्रतिबद्ध हो ताकि कांग्रेस पुनः अपना जन जन के दिलों में स्थान बना सकें।

-सम्पादक

पर्यावरण बनाम महर्षि दयानन्द

हमारे अपने चारों ओर का वातावरण पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण प्रदूषण के मुख्य पांच रूप हैं- १. वायु प्रदूषण २. जल प्रदूषण ३. ध्वनि प्रदूषण, ४. भूमि प्रदूषण ५. रेडियोधर्मी प्रदूषण

पृथ्वी की सतह से २५ से ४० किमी. की ऊँचाई पर ओजोन (रक्षा कवच) परत की एक गैस पाई जाती है। यह सूर्य की पैराबैंगनी किरणों से धरातल के पेड़ पौधों एवं जीव जन्तुओं को भस्म होने से बचाती है। परमेश्वर वेद मंत्रों से उपदेश करता है कि ''लक्षाधिक पदार्थो की शुद्धि करने वाले यज्ञ से सूर्य-जल-अग्नि-वायु और विद्युत के संग्राम वेग को समझना चाहिए। अग्नि ऊपर को और जल नीचे को बहता है। यज्ञ में दोनों के लौट पौट (उथल-पुथल) हो जाने से हजारों गुणा दाहगुण वाली हविष्यती ऊर्जाओं का आधार गुण उत्पन्न हो जाता है, जिससे वृष्टि तो होती ही है, समस्त ब्रह्माण्ड भी हविष्मान् (सुगन्धित और शक्तिमान) होकर सूर्य की हानि पहुंचाने वाली पैराबैंगनी किरणों को नीचे आने से रोकने वाला रक्षा कवच (ओजोन परत) भी भूमण्डल की रक्षा करता रहता है जिससे जीवमात्र सुरक्षित रहता है। (ऋग् १-३०-२, अथर्व-३-२१-१०, २-३२-३, यजु.-६-२३)।।

''विज्ञानं यज्ञं तनुते'' यज्ञ विज्ञान को बढ़ाता है और उत्पन्न भी करता है- तैती.उप.। जल वायु और औषधियां भूमि को घेरे हुए है। ये विश्वभेषज एवं जल औषधियों को पुरूरूप अर्थात् ब्रह्माण्ड की आंख कहता है। यज्ञ में प्रयुक्त गायघृत, कस्तूरी, केशर, जायफल, जाविञ्री मीठा आदि पदार्थ रोगनाशक और वायुशोधक है। अग्नि में इनके कण अत्यन्त सूक्ष्म होकर वायुमण्डल को शुद्ध करते हैं। पदार्थ जितना सूक्ष्म हो जायेगा उतनी ही उसकी शक्ति बढ़ जाती है। ऐसा प्रयोग करने से पदार्थ नष्ट नहीं होता केवल उसका रूप परिवर्तित होता है। पदार्थ का यज्ञ से सदुपयोग होता है।

सूर्य दिखाई देने वाले, न दिखाई देने वाले, सभी प्रदूषणों को समाप्त करता है ''सूर्यः क्रीमीन'' यजुर्वेद ४-४ सूर्य और यज्ञ द्वारा वायुमण्डल के प्रदूषण को नष्ट करता है।

पर्वत और वन दोनों वातावरण शोधक हैं। ये पृथ्वी का संतुलन बनाये हुए है। पर्वत और वन संसार के पालक और पोषक हैं इन्हें ऋग्वेद ८-८८'२ में (पुरू भोजन) ''गिरिं न पुरू भोजम्'' कहा गया है। पर्वत और वन के देवदार-चीड़ आदि के पेड़ पर्यावरण शोधक स्वास्थवर्धक कहा गया है। ६-४६-१४, ८-५३-३। इसीलिए वेद का उपदेश है कि आप बाल बच्चों सहित पर्वत की यात्रा करो। उनका ज्ञान बढ़े तथा वे दीर्घायु हों।

८६६ सामवेद कहता है कि गुरूकुलों में ब्रह्मचारी सस्वर (५-४१-६ऋग्वेद) वेद पाठ से यज्ञ करते हैं जिसके सुगन्धित धुवें से वन-पर्वत-नदी-वृक्ष-वनस्पति-सूर्य-चन्द्र हविष्मान् हो रहे हैं। सामवेद प्राणी जगत को ईश्वर का आदेश करता है कि यह परमेश्वर है जो ब्रह्माण्ड रूपी सृष्टि यज्ञ का स्वयं ऋत्विक (ऋतु ऋतु के अनुसार यज्ञ करने वाला) है जिससे सभी लोक लोकान्तर सदा हविष्मान रहते हैं- दीर्घजीवी रहते हैं।

''वेदों की ओर लौटो'' यही महर्षि लोक और नाम हैं'' महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने भारत देश के दूषित हुए पर्यावरण को हविष्मान किया है।

विद्यावाचस्पति वेदपाल वर्मा शास्त्री
मालदा बाग, पुरानी गुड मण्डी
शाहपुर, जनपद- मुजफ्फर नगर
मो.- ९९२७५७५७७७

श्रीमती गिरजा त्रिपाठी को रूपायन अचीवर एवार्ड

माँ विन्ध्यवासिनी महिला प्रशिक्षण एवं समाज सेवा संस्थान देवरिया की अध्यक्ष श्रीमती गिरजा त्रिपाठी उप मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. को उनके बालिकाओं, महिलाओं एवं बुजुर्गो की निरन्तर सेवा का मूल्यांकन करके समाज के सम्मानित पत्र अमर उजाला द्वारा उन्हें रूपायन अचीवर एवार्ड से दिनांक १६ दिसम्बर १५ को कानपुर आफिसर क्लब में सम्मानित किया जायेगा। आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा एवं सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती एवं आर्य मित्र साप्ताहिक पत्र एतदर्थ शुभ कामनायें प्रेषित की।

आर्य समाज एवं स्त्री आर्य समाज तथा आर्य कन्या इण्टर कालेज गोविन्द नगर कानपुर का 67वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज एवं स्त्री आर्य समाज तथा आर्य कन्या इण्टर कालेज गोविन्द नगर कानपुर का ६७वां वार्षिकोत्सव दिनांक ११ से १३ दिसम्बर तक सत्संग हाल आर्य समाज बी ब्लाक गोविन्द नगर कानपुर में समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। उत्सव में आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य सोमदेव अजमेर के प्रवचन एवं संगीताचार्य श्री टीकम सिंह बिजनौर के हृदयग्राही भजनोपदेश हुए। नित्य प्रातः ७:३० बजे से ८:३० बजे तक संध्या देव यज्ञ ८:३० बजे ६:३० बजे तक भजनोपदेश तथा ६:३० से १०:३० तक वेद प्रवचन तथा सायं ६:३० से ७ बजे तक संध्या प्रार्थना ७ से ८ तक भजनोपदेश ८ से ६ बजे तक वेद प्रवचन हुए।

शुभ कुमार बोहरा
प्रधान

वेद प्रचार शिविर का आयोजन

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मथुरा के तत्वावधान में मथुरा जनपद की तहसील छाता के अन्तर्गत ग्राम तरौली में वृहद मेला स्वामी बाबा का मेला में दिनांक २३, २४, व २५ नवम्बर २०१५ को वेद प्रचार शिविर आयोजित किया गया। कार्यक्रम में नियमित प्रातः वैदिक यज्ञ तथा सम्पूर्ण दिवस भजनोपदेश तथा प्रवचनों के द्वारा साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, पाखण्ड, शोषण, नारी उत्पीड़न के विरूद्ध जंग लड़ना तथा रोटी कपड़ा व मकान,शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा न्यान सुनिश्चित करना, गौ संरक्षण तथा संवर्धन, राष्ट्रीय एकता, अखण्डता, कन्या भ्रूण हत्या के महापाप को मिटाने सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु कृणवन्तो विश्मार्यम के लिए जन जागरण किया गया। वेदोपदेशक डा. गोपीराम गुणी, भजनोपदेशक सियाराम शर्मा, धर्मेन्द्र शास्त्री रहे। यज्ञ के यजमान ग्राम पंचायत के प्रधान, बी.डी.सी. सदस्य जिला पंचायक मथुरा तथा क्षेत्रीय विधायक थे।

संयोजक
महावीर सिंह आर्य
जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा
मथुरा

धरोहर.....

आर्य जगत के जाज्वल्यमान नक्षत्र–

मा. आशाराम आर्य भजनोपदेशक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

आर्य समाज के इतिहास में आर्य भजनोपदेशकों की भूमिका सदैव महत्वपूर्ण रही है। ग्रामीण क्षेत्र हो अथवा नगर क्षेत्र कार्यक्रम का शुभारम्भ इनके द्वारा ही किया जाता है। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के समय अमीचन्द्र जी मेहता ने भजनोपदेश आरम्भ किया था और उनके जीवन की शैली पर लोगों ने आक्षेप लगाये, स्वामी जी ने सुना और उसके जीवन को सुधारने का मन बना लिया। अगले दिन फिर आकर भजन गाने के लिए प्रार्थना करने पर स्वामी जी ने अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी सभी लोगों को स्वामी जी का व्यवहार अच्छा नहीं लगा लेकिन भजन के पश्चात स्वामी जी के मुख से उसके कल्याण हेतु एक वाक्य निकला- ''अमीचन्द तू है तो हीरा लेकिन कीचड़ में फंसा है'' इतना सुनना था कि हृदय ही बदल गया बस अन्तर्मन से पुकारता रहा कि अमीचन्द तू है तो हीरा पर कीचड़ में फंसा है'' अब हीरा कीचड़ से बाहर आयेगा तभी स्वामी जी के दर्शन कर आशीर्वाद लेना यह संकल्प शक्ति उसके लिए संजीवनी बन गई और वे सदा सदा के लिए पवित्र होकर अमर हो गये।

ठीक उसी प्रकार म. आशाराम आर्य के जीवन को भी देखा जा सकता है। मुझे अच्छी प्रकार से याद है कि जब रात्रि के समय मिट्टी कीचड़ से लथपथ होकर दौड़ते हुए हांफते हुए गुरूकुल ततारपुर में प्रविष्ट होकर याचना भरे स्वर में पुकार कर कहा था कि गुरू जी! आज किसी भी प्रकार रक्षा कर दो पुलिस हमारे पीछे आ रही है। जीवन में सदा ऋणी रहूंगा एक साथी और था इतना सुनकर अपने साथियों से परामर्श करके रात्रि निवास की अनुमति इस शर्त के साथ दी थी कि भविष्य को सुधारने की प्रतिज्ञा करो तब तो हम आपकी रक्षा करते हैं अन्यथा जेल में सड़ना पड़ेगा। प्रातः उठकर यज्ञशाला में यज्ञोपवीत देकर यज्ञ कराया और प्रतिज्ञा कराई इसके बाद तो जीवन में चमत्कार हो गया। मैं इसकी प्रतिभा से पूर्व परिचित था क्योंकि प्रभु प्रदत्त मधुर कण्ठ, ओजस्वी वाणी, तेजस्वी मुख मण्डल, भारी सुन्दर सुडौल शरीर, प्रभावशाली आंखे, हंसमुख चेहरा भजन गाने की अद्वितीय कला से सभी को प्रभावित कर लेने की क्षमता थी। जब तक वाद्ययंत्र हारमोनियम भी नहीं सीखा था मात्र माचिस हाथ में लेकर अंगुली से बजाकर भी सैंकड़ों की भीड़ कहीं भी एकत्रित करने की कला आपमें स्वाभाविक रूप से विद्यमान थी। बचपन से युवावस्था तक मुझे कुश्ती लड़ने का शौक था। मेलों में दंगल होते थे तो उसमें जाकर कुश्ती देखना, लड़ना एक नियम सा बन गया था। आपके ग्राम के पास छपकौली शिव मंदिर पर शिवरात्रि पर मेला पुराने समय से ही लगता है हमारे पिताश्री भी वहां कुश्ती लड़ने जाया करते थे, उसी मेले में बिना माईक बोगी पर मंच बनाकर माचिस को वाद्ययंत्र बनाकर इनके गीतों और रागनी को सुनने के लिए अपार भीड़ को सुनते हुए मैंने स्वयं देखा है। तभी मेरे मन में विचार आया कि यदि यह युवक आर्य समाज का भजनोपदेशक बन जाये तो बहुत अच्छा कार्य करेगा। वही धुन इसमें पूर्व जन्म के संस्कारों की थी और वहां किसी भी माध्यम से मिलाना था कि जीवन की संकल्प शक्ति ने दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति प्रारम्भ कर दी। आर्य समाज के प्रसिद्ध कोकिला कण्ठ भजनोपदेशक म.गजराज सिंह जी बागड़पुर के निवासी थे उनके पास भेज दिया वही वहीं दृश्य उपस्थित हो गया जो कभी गुरूवर विरजानन्द जी के यहां महर्षि दयानन्द जी के जाने पर हुआ था। वैसा ही शरीर वैसी ही भावना, वैसा ही आंगन, वैसा ही छोटी सी कुटिया बनाये म.गजराज जी ने विरजानन्द बन कर आशाराम रूपी शिष्य को पाकर वे भी धन्य हो गये तथा अमर हो गये। उनकी विद्या सफल हो गयी और उनका उत्साह भी बढ़ गया एक योग्य शिष्य को पाकर। वे भी अत्यन्त हर्षित हुए। थोड़े से समय में ही उन्होंने संगीत विद्या में सफलता प्राप्त कर ली। उसके पश्चात बेगराज आर्य शिरोमणि आर्य भजनोपदेशक परिषद के अध्यक्ष रहे उनकी शरण में भेज दिया बस जैसे सोने पर सुहागा कहावत है उसे साकार कर दिया। म. बेगराज जी की ओजस्वी वाणी को हृदयंगम कर एक एक अक्षर पंक्ति गीत भाषा भाव भंगिमा सभी को सहज भाव से स्मरण कर लिया। यदि दोनों कहीं मंच पर एक साथ होते थे तो म. बेगराज जी बताया करते थे कि आज ये प्रसंग और ये भजन सुनाना कहीं मेरा कार्यक्रम न बिगाड़ दे। इतना तदात्म्य बन गया था और उसी का प्रभाव हुआ कि जहां कहीं म.बेगराज जी के पास समय न रहता तो अपने विकल्प में वे इन्हें भेज देते थे उसका प्रभाव भविष्य के लिए सुरक्षित रहता था और फिर वे स्वतंत्र होकर वेद प्रचार के लिए दीवाने बनकर ग्राम-ग्राम नगर-नगर शहर सभी जगह सभी के लिए अपरिहार्य हो गये थे। इस क्षेत्र में विशेषकर कोई भी कार्यक्रम उनके बिना नहीं होता था पूरे भारतवर्ष में कलकत्ता, मुंबई, चेन्नई, हिमाचल प्रदेश में आपका व्यापक प्रभाव एवं परिचय हो गया था इतने थोड़े समय में इतनी जल्दी संभवतः प्रभु की इच्छा थी कहीं और भेजने की ऐसा प्रतीत हो रहा है। आपका वैशिष्टय कर्म, कथानक, प्रेरक प्रसंग सुनाकर भजन द्वारा उसकी पुष्टि करना था करूण रस एवं वीर रस के आप विशेष कलाकार थे राज कुमार भोज की कथा में बहुत रूलाया, चाचा मुंज के प्रति आपके विचार कि तू कातिल है या राजा है या चाचा है पिता है क्या हैं?जो तुझे उपमा दी जाये, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, महाराणा प्रताप एवं महारानी किरण मइ और महाभारत में श्री अर्जुन और कर्ण का युद्ध महर्षि दयानन्द सरस्वती का इतिहास भजनों का पुट देकर जो प्रस्तुतिकरण करते थे उसकी उपमा तो मात्र म.बेगराज जी से ही दी जा सकती है। रात्रि में १२ बज जाये १ बज जायें कोई भी उठने का नाम नहीं लेता था। गुरूकुल शिक्षा में पढ़ी लड़की, स्कूल में पढ़ा चन्द्रपाल यह इतिहास सभी लोग कहकर बार बार सुनते थे। ऐसे आर्य समाज के उपदेशक बहुत कम है। प्रातः काल के समय ईश्वरभक्ति के गीतों से पहले सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास एवं ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के कुछ अंशों को कण्ठस्थ कर लिया था। आर्योद्देश्य रत्न माला के प्रमाण देकर उपदेश की गरिमा बढ़ाना उनके लिए सामान्य सी बात थी लेकिन सुनने में विशेष लगती थी। आपको इस दिशा में ऊँचा उठाने का कार्य आर्य विद्वान पं. वेदप्रकाश जी क्षोत्रिय दिल्ली का भी विशेष योगदान है यह उन्होंने उनकी अन्त्येष्टि के समय अपनी श्रद्धांजलि देते हुए बताया था। उन्होंने बताया कि मैं उसे याद करवाता, सुनता न सुनाये तो उसे दंडित भी कर देता था फिर वे सहज स्वीकार इसीलिए करते थे कि उन्हें ज्ञान पिपासा में उनके द्वारा तृप्ति हो रही थी जो अपने जीवन के मार्ग को दिशा मोड़कर दशा सुधारने के लिए संकल्पित है वह कुछ भी कष्ट उठाने में प्रसन्नचित्त एवं उत्साही है। उसके लिए एकदम नयापन है और जीवन का एक प्रकाश है जिससे स्वयं प्रकाशित होकर अन्य लोगों को भी प्रेरणा देकर जीवन जीने की कला बताना चाहते थे। गुरूकुल ततारपुर से मात्र १ किमी. की दूरी पर उनका घर है जब भी कार्यक्रमों पर जाते और उधर से आते तो प्रायः गुरूकुल होकर जरूर जाते और अपना अनुभव प्रचार कैसा प्रभावशाली रहा? सारा वृत्तांत सुनाया करते थे। अवकाश काल में सभी आचार्यगण भी लाभान्वित हो जाया करते थे। कई स्थानों पर मैं साथ ले जाया करता था जब कभी वे खाली रहते अथवा इधर कार्यक्रम कराना होता था तो भी साथ रहने का अवसर मिला है दूर दूर जाने का मुझे समय भी कम मिला है फिर भी कई बार आप आर्य समाज के अधिकारियों को भी प्रेरणा देकर कहा करते थे कि आचार्य जी को बुलाओ उनका उपदेश अच्छा लगेगा समय रहने पर मैं चला जाता था जैसे छानीबाड़ी राजस्थान में बुलवाया इधर तो लगभग सभी परिचित है पर वे प्रेरणा दिया करते थे ऐस फोन द्वारा समय समय पर अधिकारियों ने बताया। गुरूकुल पूठ और गुरूकुल ततारपुर के वार्षिक सम्मेलन आपके द्वारा ही आमंत्रित आर्य उपदेशक एवं भजनोपदेशक बुलाये जाते रहे हैं। अब बड़ी द्विविधा हो गई हैं। उड़ीसा प्रांतीय सम्मेलन रायपुर में था वहां मिले बहुत अच्छा लगा आपके विचारों से सभी श्रोता प्रभावित होते थे कभी कभी वातावरण को भावुक बना देते थे। घर परिवार से अत्यन्त आत्मीय एवं समीपस्थ संबंध रहा है, पिता जी माता जी के अंतिम समय पर आप आये थे गुरूकुल पूठ का सम्मेलन चल रहा था उससे २ दिन पूर्व ही पूज्या माता जी का स्वर्गवास हो गया था मैं किसी को बताना नहीं चाहता था सभी आत्मीय आर्यो को कष्ट होगा अतः मैं शांत ही रहा कार्यक्रम समापन सत्र चल रहा था कि आपका जब बोलने का समय आया भूमिका बनाकर बोले कि जब से गुरूकुल बना है प्रत्येक कार्यक्रम में माता जी के दर्शन होते थे आप कैसा सूना सूना सा लग रहा है और आचार्य जी ने यहां किसी को बताया तक नहीं उनकी यहां शोक सभा होनी चाहिए थी मौन रखकर उनके प्रति कृतज्ञता होनी चाहिए थी आदि आदि बोलकर पूरा वातावरण भावुक बनाकर करूण रस से परिपूर्ण कर दिया। मैं विवश हो गया फिर सभी ने माता जी के विषय में कुछ-कुछ कहा। मैंने बताया कि यह सम्मेलन प्रभावित न हो अतः मौन रहा और परिवार में यज्ञ चल रहा है ३ दिन बाद वहीं पर शांति यज्ञ है तथा सभा श्रद्धांजली के रूप में हैं वहीं करेंगे तब सभी को कार्ड दिये गये ऐसे प्रभावशाली वक्ता ने पूरा सम्मेलन ही विषयान्तर कर दिया जो मैं नहीं चाहता था। आज उनकी पुण्यतिथि पर उनकी स्मृतियां बार बार मुझे प्रेरित कर रही है अतः आर्य

शेष पेज ७ पर देखें....

मनुष्य की उन्नति के सार्वभौमिक 10 स्वर्णिम सिद्धान्त व मान्यतायें

मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

मनुष्य जीवन ईश्वर की जीवात्मा को अनमोल देन है। सभी मनुष्यों का कर्तव्य है कि वह इस संसार व प्राणीमात्र के बनाने व पालन करने वाले ईश्वर को जानें और साथ ही अपने कर्तव्य को जानकर उसका निर्वाह करें। हम आगामी पंक्तियों में इस विषय का उल्लेख करेंगे जिसको पूर्णतया जानकर व उनका पालन करने से मनुष्य जीवन की निश्चित रूप से चरम उन्नति व सफलता की प्राप्ति होती है। यह सभी नियम वेदों के मर्मज्ञ व साक्षात्कृतधर्मा महर्षि दयानन्द सरस्वती के बनाये हुए हैं जो स्वयं में अनूठे व अपूर्व हैं। पहला नियम है कि 'सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है।' इस नियम में बताया गया है कि संसार में जितनी भी सत्य विद्यायें हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है और इन सत्य विद्याओं से इतर जो सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, पृथिवीस्थ सभी भोग्य पदार्थ और नक्षत्र आदि ब्रह्मण्ड के अंग आदि हैं, वह व उसके सभी पदार्थों का स्रष्टा, रचयिता वा आदि मूल परमेश्वर है। इस सत्य सिद्धान्त से इस मान्यता का खण्डन हो जाता है कि यह संसार बिना किसी ईश्वर के स्वयमेव बना या फिर सदा से है और सदा ऐसा ही रहेगा। यह सर्वमान्य है कि कोई भी बुद्धिपूर्वक रचना स्वतः वा स्वयमेव कदापि न होती है न हो सकती है जिस प्रकार कि रसोई में रोटी बनाने का सभी सामान आटा, जल, तवा, परात, ईधन, चकला, बेलन आदि उपस्थित हो तो भी, अनन्त काल बीतने पर भी, बिना कर्ता के रोटी स्वयमेव नहीं बनती। इसी प्रकार यह सृष्टि भी बिना कर्ता-ईश्वर के नहीं बनती। इसका सृष्टि का कर्ता सर्वव्यापक, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान तथा आंखों से न दिखने वाली सत्ता ईश्वर है।

दूसरा स्वर्णिम नियम है कि 'ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु अजन्मा, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।' यह नियम सब सत्य विद्याओं और सब पदार्थो के आदि मूल परमेश्वर के स्वरूप का यथार्थ स्परूप प्रस्तुत करता है। सच्चिदानन्द शब्द का अर्थ कि ईश्वर सत्य है, चेतन है और आनन्द स्वरूप है अर्थात् यह तीनों गुण व लक्षण ईश्वर में हैं। इनके अतिरिक्त वह आकार रहित, अनन्त शक्तिशाली, सब प्राणियों के प्रति न्याय करने वाला, दया का सागर, जिसका कभी जन्म न हुआ न होगा और न वह जन्म व अवतार ले सकता है, जिसमें कभी किसी प्रकार का कोई विकार नहीं होता, जो अनादि है अर्थात् जिसका आरम्भ कभी नहीं हुआ व जो सदा से है, अनुपम है अर्थात् जिसके गुण, कर्म व स्वभाव सर्वश्रेष्ठ है और जिसके समान अन्य कोई सत्ता व जीवात्मा आदि नहीं हैं, सारे संसार व ब्रह्मण्ड का एकमात्र वही आधार है, सभी ऐश्वर्यो का स्वामी है, सारे ब्रह्मण्ड में सर्वत्र व्यापक है, ऐसा कोई स्थान नहीं है कि जहां वह ईश्वर उपस्थित न हो, सर्वान्तर्यामी अर्थात् घट-घट का वासी है, वह अजर है अर्थात् वह बाल्यावस्था, युवावस्था तथा वृद्धावस्था सहित ह्रास व उन्नति से सर्वथा रहित है, मरने व नष्ट न होने वाला अविनाशी है, वह किसी से डरता नहीं है अपितु उसके न्याय से बुरे काम वा पाप करने वाले मनुष्य एवं अन्य प्राणी डरते हैं, नित्य अर्थात वह ईश्वर सदा से है और सदा रहेगा, उसका कभी अभाव नहीं होगा, वह पवित्र और पवित्रतम है और इस सारे ब्रह्मण्ड को उसी ने बनाया है। यह भी जानने योग्य है कि ईश्वर जीवात्माओं के पूर्व कल्प में किये गये पाप-पुण्यों वा प्रारब्ध का सुख व दुःख रूपी भोग कराने के लिए इस सृष्टि की रचना कर इसे धारण करता है। जीवात्मा व सभी मनुष्यों का कर्तव्य है कि वह ईश्वर के उपकारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना करें। संसार में स्तुति-प्रार्थना व उपासना करने योग्य वही एकमात्र ईश्वर है क्योंकि वह अनादि काल से अनन्त काल तक हमारे साथ सखा व मित्र की तरह रहने वाला हमारा कल्याण करने वाला, बन्धु, माता, पिता, रक्षक, पालक व जन्म-मृत्यु-मोक्ष सहित सुख एवं आनन्द प्रदान करने वाला है। जो व्यक्ति ईश्वर की योग विधि से स्तुति-प्रार्थना-उपासना नहीं करता है वह कृतघ्न, महामूर्ख व पापी होता है व जन्म-जन्मान्तरों में दुःख भोगता है।

मनुष्य उन्नति का तीसरा स्वर्णिम नियम है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना - पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब श्रेष्ठ मनुष्यों, जिन्हें संस्कृत में आर्य कहते हैं, का परम धर्म है। वेदों के यथार्थ स्वरूप का अध्ययन करने पर इस तथ्य व रहस्य का ज्ञान होता है कि वेद सभी सत्य विद्याओं का पुस्तक व ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ सृष्टि की आदि में अस्तित्व में आया। अनुसंधान करने पर ज्ञात होता है कि यह किसी मनुष्य की रचना नहीं है अपितु यह सांसारिक मनुष्य की सभी साहित्यिक व अन्य ग्रन्थों का आधार है। मनुंष्य की बुद्धि को ज्ञान की आवश्यकता होती है। सृष्टि के आरम्भ में पहली पीढ़ी के अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न मनुष्यों को ज्ञान देने वाले माता-पिता व आचार्य तो होते नहीं हैं। अतः मनुष्य को ज्ञान मिलना असम्भव होता है। न वह बोल सकता है और प्रकृति में होने वाली ध्वनियों को वह समझ सकता है। ईश्वर सर्व विद्याओं का आधार व मूल स्रोत है। वह सर्वव्यापक व सर्वान्र्यामी है। उसका सृष्टि बनाने व प्राणी मात्र को उत्पन्न करने के साथ यह कर्तव्य भी है कि वह आदि सृष्टि के प्रथम पीढ़ी के मनुष्यों को ज्ञान व भाषा प्रदान करे। वही आदि सृष्टि में मनुष्यों को सबसे पहले ज्ञान देता है जिसे वेद कहते हैं। ईश्वर ने सृष्टि की आदि में यही वेद ज्ञान चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा की आत्माओं में प्रेरणा के द्वारा दिया वा स्थापित किया था। इन ऋषियों ने अन्य मनुष्यों को इसका अध्ययन कराया और उसके बाद यह अध्ययन अद्यावधि होता आ रहा है। आज भी वेद मूल रूप में सुरक्षित हैं। इसकी पुष्टि कोई भी व्यक्ति इनका अध्ययन करके कर सकता है। वेदों में परा व अपरा अर्थात् आध्यात्मिक और सांसारिक सभी प्रकार का यथार्थ ज्ञान उपलब्ध है। वेदों में अन्य धर्म ग्रन्थों की तरह से कहानी किस्से या इतिहास किंचित भी नहीं है। यह विवेचित तथ्य है कि यदि ईश्वर वेदों का ज्ञान न देता तो मनुष्य बिना ईश्वर की सहायता के भाषा की उत्पत्ति नहीं कर सकता था जिससे उसका जीवन निर्वाह न हो सकने के कारण संसार आगे नहीं चल सकता था, आरम्भ में वहीं समाप्त होना निश्चित होता है। ऐसा इसलिए कि मनुष्यों को छोटे से छोटा व्यवहार करने के लिए वा चिन्तन व विचार करने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है जिसके न होने व फलतः स्वयं व परस्पर व्यवहार न होने से जीना सम्भव नहीं होता। पशुओं की बात और है, उन्हें ईश्वर ने अपने सभी काम करने के लिए आवश्यकता के अनुरूप ज्ञान दिया है जिससे वह अपने सभी कार्य सुगमतापूर्वक करते हैं। मनुष्य इस स्वभाविक ज्ञान की दृष्टि से पशुओं से काफी पीछे है।

जीवन उन्नति का चौथा नियम है कि 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यन रहना चाहिये। पांचवा नियम है कि 'सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिये। छठा नियम है कि 'संसार का उपकार करना मनुष्य व समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। सातवां नियम है कि सबसे प्रीति-पूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिये। आठवां नियम है कि 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।' यह सभी नियम निर्विवाद हैं और अत्यन्त सरल भी हैं। अतः इस पर कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। हां, उनका पालन करने से उन्नति और पालन न करने से जीवन की अवनति होना सुनिश्चित है, इसकी कल्पना की जा सकती है। इतना कहना उचित होगा कि अविद्या व अज्ञान का नाश करना भी सभी मनुष्यों का कर्तव्य व धर्म है। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो जीवन व समाज में अविद्या में वृद्धि होगी जो नाना प्रकार की समस्याओं को जन्म देंगी जैसा कि आजकल समाज में देखने को मिल रहा है। अविद्या से उत्पन्न इन सामाजिक बुराईयों में अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीतियां, सामाजिक असमानता, अस्पृश्यता, लोगों को शिक्षा के अधिकार से वंचित करना व आतंकवाद सहित अहिष्णुता का ढोंग करना आदि भी शामिल हैं। मनुष्य जीवन की सफलता के लिए नवां स्वर्णिम नियम है कि प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये। किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये। इस नियम में महत्वपूर्ण व आवश्यक बात यह कही गई है हमें अपनी उन्नति तो करनी ही है परन्तु दूसरों की उन्नति करने पर भी हमें सम्यक् ध्यान देना व पुरूषार्थ करना है। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो बहुत से लोग उन्नति से वंचित होकर पिछड़ जायेंगे, जो उन्नत व्यक्तियों के लिए ही कष्टदायक होगा। आज समाज में इसका प्रभाव सर्वत्र देखने को मिलता है। चोरी, लूट व भ्रष्टाचार आदि इसी कारण से तो है कि अविद्या का नाश नहीं किया गया और दूसरों की उन्नति की ओर ध्यान नहीं दिया गया है। पाठक इन सभी नियमों पर विचार कर इसके लाभों व न मानने से होने वाली हानियों पर और अधिक विचार कर सकते हैं। अन्तिम दसवां स्वर्णिम नियम है कि सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व-हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये। और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें। सामाजिक सर्व-हितकारी नियम में चरित्र निर्माण, अनुशासन, स्वच्छ व पवित्र जीवन तथा भ्रष्टाचार मुक्त व्यवहार, सहिष्णुता आदि अनेक बातें आती हैं। इससे न केवल देश व समाज उन्नत होता है अपितु व्यक्तिगत जीवन भी उन्नत होता है। जिस परिवार, समाज व देश में इन नियमों का व्यवहार किया जायेगा, उसकी कायापलट हो जायेगी और वह परिवार, समाज व देश सुख-शान्ति-समृद्धि आरोग्यता-प्रसन्नता-उल्लास से युक्त होकर स्वर्ग व मुक्ति का अधिकारी होगा।

हम आशा करते हैं कि पाठक इस लेख को पसन्द करेंगे।

१६६-चुक्खूवाला,
देहरादून

वैवाहिक नृत्य - एक सामाजिक अभिशाप

लोकेश आर्य, पत्रकार

यदि हम बारातों में होने वाले नृत्य को अश्लीलता का नग्न प्रदर्शन माने तथा इसे भांड़े नृत्य की संज्ञा दे तो गलत न होगा बारातों में होने वाला नृत्य क्या वास्तव में एक सामाजिक अभिशाप नहीं है?यदि हम इसके विभिन्न पहलुओं पर थोड़ा सा भी चिन्तन करें तो पाएगें कि हमारा समाज तथा हम स्वयं अपनी संस्कृति से हटकर दूसरों के लिए मनोरंजन का केन्द्र बिन्दु बनकर रह गए है।

कहने को तो विवाह आयोजन को लेकर पारिवारिक एवं सम्बन्धित जन अपनी खुशियों को तरह-तरह से प्रदर्शित करते है ऐसा स्वाभाविक भी है लेकिन अपनी खुशी का प्रदर्शन हम कैसे तथा किस रूप में करें इस पर भी विचार करना चाहिए यह नहीं कि हम खुशियों को प्रदर्शित करने में अपनी मान मर्यादाओं तथा अपनी सभ्यता तथा संस्कृति के आंचल को निकाल कर फेंक दे आज समाज में हम अपने को जिस रूप में प्रदर्शित कर रहे है वास्तव में वह एक घिनौना रूप है जिसे हम खुले रूप से सामाजिक अभिशाप कह सकते है।

विवाह आयोजन एक सामाजिक कृत्य है इसे अपनी सामर्थ्य के अनुसार लोग समारोह के रूप में करने लगे है समारोह भी ऐसा भव्य 'खर्चीला' कि समाज पतनोमुखी हो चला है। किसी विद्वान ने लिखा है कि 'मंहगी शादियां आदमी को बेईमान बनाती है' इस बेइमानी का पल है कि इस पवित्र आयोजन में इतनी कुरूपतायें आ गयी है कि देखने पर लज्जा आने लगती है।

इस विवाह को समारोह में सड़क पर शराब पीकर नृत्य करना आम प्रचलन हो गया है कि संभ्रान्त परिवार की अर्द्धनग्न महिलायें जब नृत्य करने लगती है तो किसकी दृष्टि किस कोण से जाती है कितनी सही होती है जो व्यक्ति अपनी माँ बहन पत्नी की ओर किसी की कामुक नजर उठते ही तिलमिला जाता है वही व्यक्ति कैसे अपनी अपनी पत्नी बहन को नाचते खुश हो लेता है आश्चर्य की बात है ?

इस खुशी के अवसर पर प्राचीन समय में मर्यादाओं में रहकर महिलायें चहार दीवारी के अंदर जब नृत्य गायन वादन करती थी तो घर के व्यक्ति को ही देखने के लिये मनाही थी। तब पुरूष अपनी सभाओं में आनन्द उठाते थे यही प्रथा जब दहलीज को लांघ कर सड़क पर आ गयी तो कितना वीभत्स रूप धारण कर लिया है अभी और कितनी घिनौनी होगी जब पराया मर्द दूसरे की पत्नी बहन के कमर में हाथ डाल कर नाचेगा। यह नृत्य अपनी सभ्यता संस्कृति पर आघात है इस नृत्य को तुरन्त बंद करने की आवश्यकता है। वरना एक दिन ऐसा आयेगा कि शराब और खुशी की मदहोशी में मर्यादायें तोड़ कर महिलायें बैण्ड बाजें वालो के साथ नृत्य करने लगेंगी।

बहुत ही बड़ी विड़म्बना है कि आज हम जो कुछ भी जैसा भी कर रहे है उसे सामाजिक मान मर्यादा ही समझ बैठे है इस लकीर के फकीर अनपढ़ अशिक्षित ही नही डॉक्टर, वकील, समाज सेवी, साहित्यकार, समाज के चिंतक यहां तक सभी बुद्धिजीवी इस सामाजिक अभिशाप के शिकार हो चुके है किसी को भी यह चिन्ता नही है कि हम स्वयं अपने साथ ही इतना बड़ा खुला मजाक क्यों कर रहे है।

बारातों में होने वाले इस नृत्य की आज पराकाष्ठाऐं टूट चुकी है कल तक जहां हम स्वयं नाचते कूदते अपने रूपयों के अम्बार को आग लगाते थे वहीं आज इस प्रदर्शन ने अत्यन्त घृणित रूप से लेकर समाज में लज्जा की मूर्ति कहें जानें वाली नारी जिसे हम अपनी मां, बहन, तथा पत्नी के रूप में देखते है की घरों से लाकर सड़को पर नग्न प्रदर्शन के लिए लाकर खड़ा कर दिया है।

बारातों के नृत्य में महिलाओं की भागीदारी वास्तव में बहुत ही शर्मनाक तथा घर की इज्जत को लूटा देने जैसी बात है लेकिन बाहरे समाज तथा इसके कर्णधार उन्हें आज इस बात की बिल्कुल चिन्ता नही है कि आज यह हम सब क्या कर रहे है घर की इज्जत को लुटा देने के बाद भी हम इसे अपनी शानो शौकत मान बैठे है इससे बड़ी विडम्बना तथा शर्मनाक बात और क्या होगी।

यह एक सामाजिक परम्परा है कि जब बड़े किसी भी आदत को अपना लेंगे तथा छोटे भी उसी का अनुसरण करते हुए इसमें अपना गौरव अनुभव करेंगे यही बात समाज के भी विभिन्न पहलुओं पर लागू होती है जब समाज के सश्य तथा शिक्षित कहे जाने वाले परिवार अपने परिवार की इज्जत 'महिलाओं' का सरेआम सड़को पर प्रदर्शन किए जाने से नहीं चूंकेंगे तब समाज के छोटे तबके के लोग भी इस परिपाटी का शनैः शनैः अनुसरण करने लगेंगे तब समाज का रूप अत्यन्त ही विकृत हो जाएगा।

बारातों में नृत्य के दौरान नोटो की खुले आम बौछार करना भी समाज को अन्धकार में ढकेलना जैसा ही है इसे भी हम यदि सामाजिक अभिशाप कहे तो अनुचित न होगा। नृत्य के दौरान जहां बड़े-बड़े धनाढ्य अपनी शानोशौकत का प्रदर्शन करते हुए नोटो की नई नई गड्डियों से नोटों की बौछार करते है वहीं आज समाज का निर्धन वर्ग भी इस परम्परा का अनुसरण कर भले ही जेब में कुछ न रह जाऐ बचे कुचे नोटो का प्रदर्शन कर अपनी शानोशौकत में कमी नही आने देना चाहता है।

इस अभिशाप का सीधा प्रभाव गरीब तबके के लोगों पर पड़ रहा है जिनके घर में दो जून की रोटी तक नही है लेकिन समाज में अपनी प्रतिष्ठा को बरकरार रखने के लिए बची खुची पूंजी में भी आग लगा देते है परिणामतः निम्न तथा मध्यम वर्गीय परिवार अपराधों की और अग्रसर होते है।

विडम्बना है कि बारात के दौरान सैकड़ो रूपये पानी की तरह लुटा देने वालो के यहां जब कोई निर्धन अपाहिज, बेसहारा दरवाजा खटखटाता है तथा सहयोग की अपेक्षा करता है तो यही समाज के अलम्बदार जो नोट लुटाकर पूंजीपति होने का ढोंग रचते है गरीब असहाय, लाचार को धक्के देकर भगा देते है।

क्या होगा इस समाज का तथा इस समाज के कर्णधारों का ?हमारी भारतीय सभ्यता संस्कृति जिसका विश्व लोहा मानता है आज उसकी जो दुर्गति हो रही है देखकर आंसू बहने लगते है शरीर कंपन कर उठता है मन सिहर उठता है मष्तिस्क सोंचने को विवश हो जाता है कि हमारे महापुरूषों तथा ऋषि-मुनियों ने जो हमें शास्त्र सम्मत मार्ग दिखाया हमारी सभ्यता संस्कृति को विश्वगुरू की पदवी पर आरूढ़ किया क्या आज हम सब उनकी संतानें उनकी इस अमूल्य संचित धरोहर को तहस-नहस करके ही चैन लेंगे।

नही, नही आज हमें सोंचना होगा कि हम किधर जा रहे है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' अर्थात- जहां नारियों का सम्मान होता है वहां देवता रमण करते है इस देववाणी की सार्थकता को सत्य साबित करना होगा भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता की रक्षा करनी होगी तभी हम समाज को सही दिशा में पाएगें अन्यथा समाज के वह दुर्दिन दूर नही जब हम स्वयं उपहार के केन्द्र बिन्दु बनकर सामाजिक दासता तथा विदेशियों के पुनः गुलाम हो जाएगें।

यह सड़क छाप नृत्य एवं नोटों की बरसात सामाजिकता के प्रतिकूल है इसका कोई औचित्य नही है अगर पैसा खर्च करना ही है तो विवाह के अवसर पर सामाजिक संस्थाओं को दान देकर, निर्धन असाहय की सहायता कर अधिक से अधिक सन्तुष्टि प्राप्त कर सकते है। इसके विपरीत होता यह है कि नोटों को लुटाते समय अगर कोई भिखारी आ जाये तो उसे दुत्कार देते है। यह कैसी खुशी है?जो भूखे को भोजन और नंगे को वस्त्र नही दे सकती तो यह समारोह सामाजिकता के विरूद्ध है इसका तुरन्त बहिष्कार किया जाना चाहिए।

समाज के कर्णधारो, चिन्तकों, समाजसेवी संगठनों के स्वयं भू नेताओं तथा समाज के अन्य सभी बुद्धिजीवियों को चाहिये कि वह सामाजिक अभिशाप से स्वयं बचे तथा समाज के लोगों को इस बुराई से दूर रहने का निवेदन करें।

बारातों में स्वयं नाचना, महिलाओं को नचाना तथा रूपयों का लुटाना बंद करके अपनी सभ्यता का परिचय दें अन्यथा आगे आने वाला समय हमें हर्गिज माफ नही करेगा। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति एक भी व्यक्ति को सामाजिक बुराई से बचाने का प्रयास करेगा तो मेरा यह सब लिखने का अभिप्राय सार्थक होगा तथा समाज में नव चेतना का संचार होगा।

-पोस्ट तिलहा,
शाहजहांपुर

काकोरी शहीदों के बलिदान की ९९वीं वर्षगांठ का आयोजन

लखनऊ शहीद स्मृति समारोह समिति उ.प्र. के तत्वावधान की गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी १७ दिसम्बर, २०१५ को प्रातः ६:३० बजे काकोरी शहीद स्मारक पर वीर रस कवि सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है जिसमें स्थानीय विद्यालय एवं नगर के प्रबुद्ध नागरिक गण एवं शासन के अधिकारीगण भाग लेंगे। कार्यक्रम की जानकारी देते हुये श्री उदय खत्री ने इस अवसर पर नागरिकों से भाग लेने एवं पूर्ण सहयोग देने की अपेक्षा की है।

अद्भुत क्रान्तिकारी वीरांगना मैडम भीखाइजी कामा

उदय खत्री

''संसार के स्वतंत्रता प्रेमी साथियों!''

इससे पूर्व के अपनी बात आपके सम्मुख रखूँ, मैं अपनी मातृभूमि भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महान अमर शहीदों के तप और बलिदान के प्रतीक इस राष्ट्रीय तिरंगे झण्डे को आपके सम्मुख पहरा रही हूँ तथा आप सभी महानुभावों से निवेदन करती हूँ कि इस झण्डे के सम्मान में खड़े होकर इसका अभिवादन करें। मैं और मेरे समस्त देशवासी आपके अत्यन्त आभारी रहेंगे।

१८ अगस्त, १९०७ को जर्मनी के स्टटगार्ट नगर में आयोजित ''अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन'' के अवसर पर भारत का प्रतिनिधित्व कर रहीं महान क्रान्तिकारी वीरांगना मैडम भीखाइजी कामा ने मंच पर उपस्थित होकर अपने उपर्युक्त सम्बोधन के साथ जब भारत के अपने तिरंगे झण्डे को फहराया तो सम्मेलन में उपस्थित समस्त देशों के प्रतिनिधि एक साथ उठ खड़े हुए एवं उन लोगों ने देर तक करतल ध्वनि कर भारतीय झण्डे को सम्मान दिया।

सम्मेलन में बोलने से पूर्व मैडम कामा ने वन्दे मातरम् गीत भी गाया। यह पहला अवसर था जब भारत का अपना स्वतंत्र झण्डा फहराया गया तथा वन्दे मातरम् गीत अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर सम्मानित हुआ। उस झण्डे का डिजायन तैयार किया था महान क्रान्तिकारी वीर विनायक दामोदर सावरकर एवं हेमचन्द्रदास ने। झण्डा तीन रंगों का था। ऊपर की हरी पट्टी में एक सीध में आठ कमल-पुष्प बने थे जो भारत के तत्कालीन आठों प्रान्तों के प्रतीक थे। बीच की केसरिया पट्टी पर वन्दे मातरम् अंकित था तथा सबसे नीचे की लाल पट्टी पर एक सिरे पर सूर्य एवं दूसरे सिरे पर अर्ध-चन्द्र अंकित था।

उक्त अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में मैडम कामा ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद की चक्की में पिस रहे भारत की तत्कालीन जर्जर स्थिति पर बड़ा ओजस्वी तथा मार्मिक भाषण देते हुए भारत की स्वतंत्रता के समर्थन का प्रस्ताव रखा।

सम्मेलन में उपस्थित सभी प्रतिनिधियों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ प्रस्ताव के समर्थन में हाथ ऊँचे कर दिए। ब्रिटेन के उदारवादी सदस्य हिन्डमैन को छोड़ सभी ब्रिटिश प्रतिनिधियों ने प्रस्ताव का घोर विरोध किया।

सम्मेलन के नियमानुसार प्रस्ताव का सर्वसम्मति से पारित होना अनिवार्य था, सो ब्रिटिश विरोध के कारण प्रस्ताव भले ही पारित नहीं हुआ परन्तु सारे संसार के लोगों की सहानुभूति भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रति अवश्य हो गई।

यह भी कदाचित पहला अवसर था जब नरमपंथियों के स्थान पर भारत के तीन महान क्रान्तिकारियों मैडम कामा, वीरेन्द्र नाथ चट्टोपाध्याय एवं सरदार सिंह राणा ने ''अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन'' में भारत का प्रतिनिधित्व कर भारत की प्रतिष्ठा में और वृद्धि की थी। इसी अवसर पर इन क्रान्तिकारियों का कई देशों के क्रान्तिकारी प्रतिनिधियों जिनमें रूस के महान क्रान्तिकारी नेता लेनिन का नाम विशेष उल्लेखनीय है, से अच्छा परिचय स्थापित हो गया था ।

सन् १८५७ की क्रान्ति के चार वर्ष बाद बम्बई के एक प्रसिद्ध पारसी व्यापारी श्री सोहराबजी फ्रामजी पटेल के घर २४ सितम्बर, १८६१ को जन्मी भीखाइजी का स्वभाव अपने सभी नौ भाई-बहनों से भिन्न था। घर भर की लाड़ली मुन्नी बचपन से ही बहुत कुशाग्र बुद्धि की थी। उन्हें प्रत्येक विषय में सर्वोच्च अंक प्राप्त होते थे। पढ़ाई के अतिरिक्त उन्होंने कई भाषाऐं भी सीख ली थीं।

१८५७ की याद अभी ताजा ही थी। उस प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की कहानियां सुन उनके मन में भी क्रान्तिकारी शहीदों के प्रति अगाध श्रद्धा हो गई थी। अंग्रेजों द्वारा किए गए उत्पीड़न की खबरों ने उनके हृदय में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति घृणा एवं विद्वेश के भाव भर दिए थे। उनके विचार भी क्रान्तिकारी हो चले थे।

सन् १८८५ में बम्बई के एक प्रसिद्ध वकील श्री के. आर. कामा के साथ उनका विवाह हुआ। परन्तु मैडम कामा अधिक दिनों तक दाम्पत्य-सूत्र के बन्धन में बंध के न रह सकीं तथा धीरे-धीरे उन सभी गतिविधियों में भाग लेने लगीं जो भारत में अंग्रेजों के विरूद्ध चल रहीं थीं। मैडम कामा सामाजिक कार्यों में भी काफी रूचि लेती थीं।

उन्हीं दिनों बम्बई में प्लेग का प्रकोप हो जाने के कारण बड़ी संख्या में लोग मरने लगे। तब तक प्लेग के निरोधात्मक टीके का आविष्कार नहीं हुआ था, जिस कारण कोई भी व्यक्ति प्लेग ग्रस्त रोगियों की सेवा सुश्रुपा करने का साहस नहीं जुटा पाता था। रोग की भयावहता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि स्वयं सगे-सम्बन्धी प्लेग के संक्रमण के भय से रोगी को भगवान भरोसे छोड़ भाग खड़े होते थे। परन्तु मैडम भीखाइजी कामा बिना कोई चिन्ता किए इस चुनौती को स्वीकार कर प्लेग-ग्रस्त रोगियों की सेवा करने में दिन रात जुट पड़ी।

आगे चल कर प्लेग-ग्रस्त रोगियों की सेवा करते-करते मैडम कामा स्वयं प्लेग-ग्रस्त हो गई। काफी इलाज कराने के बाद सौभाग्य से वे मृत्यु के मुँह से तो बच गई, परन्तु अत्यन्त कमजोर हो गई।

अन्ततः परिवारवालों एवं शुभचिन्तकों के अत्यधिक जोर देने पर मैडम कामा स्वास्थ्य-लाभ हेतु अप्रैल, १९०१ में यूरोप चली गई।

यूरोप में जर्मनी, फ्रांस, स्काटलैण्ड आदि देशों में रहकर वे सन् १९०५ में लन्दन पहुँची।

यूरोप-प्रवास के दौरान ही मैडम कामा कई देशों के क्रान्तिकारियों एवं अन्य भारतीय क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आ चुकीं थीं जिनमें सर्वश्री श्यामजी कृष्ण वर्मा, वीरेन्द्र नाथ चट्टोपाध्याय, सरदार सिंह राणा, वीर विनायक दामोदर सावरकर एवं वी.वी.एस. अय्यर के नाम उल्लेखनीय हैं।

उन दिनों इण्डियन नेशनल कांग्रेस के संस्थापक नेताओं में एक श्री दादा भाई नौरोजी लन्दन में ही रह रहे थे। मैडम कामा ने उनके निजी सचिव के रूप में कई दिनों तक कार्य किया। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने जब इण्डियन सोशलाजिस्ट का प्रकाशन आरम्भ किया तो मैडम कामा ने उसमें कई प्रेरक लेख लिखे। होमरूल सोसायटी आफ इण्डिया के कार्यो में भी वे काफी सक्रिय रहीं।

उन्हीं दिनों जैसा कि हम आरम्भ में ही उल्लेख कर चुके हैं। मैडम कामा को जर्मनी के स्टटगार्ट नगर में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में भाग लेने हेतु आमंत्रित किया गया, जहां पहुँच कर उनकी ख्याति विश्व भर में फैल गई। उनके प्रेरक भाषणों से प्रभावित हो उन्हें कई देशों में आमंत्रित किया जाने लगा। जर्मनी के उपर्युक्त समाजवादी सम्मेलन की समाप्ति के पश्चात् आमंत्रण पर, मैडम कामा अमरीका गई। वहां लोगों ने उनका अभूतपूर्व स्वागत किया। अमरीका के प्रमुख अखबारों ने मैडम कामा की भारत की स्वतंत्रता के प्रति उत्कट भावना से प्रभावित हो उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। मैडम कामा ने उन्हें बताया कि यद्यपि भारत की अधिकांश जनता अशिक्षित एवं भूखी है, परन्तु पेट की भूख से कहीं अधिक उन्हें स्वतंत्रता की भूख है। उन्होंने अमरीकावासियों से भारत को स्वतंत्रता प्राप्ति में सहयोग करने की पुरजोर अपील की। उन्हें अमरीका के कई राज्यों में आमंत्रित किया गया।

अमरीका प्रवास के दौरान उन दिनों अमरीका में ही रह रहे भारत के महान क्रान्तिकारियों से मैडम कामा का घनिष्ठ परिचय हो गया था, जिनमें गदर पार्टी के संस्थापक लाला हरदयाल एवं मौलवी बरकुतुल्लाह के नाम विशेष उल्लेखनीय है।

मैडम कामा अमरीका प्रवास के पश्चात् लन्दन लौट आई। लन्दन स्थित उनका निवास दुनिया भर के स्वाधीनता प्रेमी क्रान्तिकारियों का गढ़ बन गया। रूस, आयरलैण्ड, मिस्र एवं जर्मनी आदि देशों के क्रान्तिकारी उनसे निरंतर सम्पर्क करते। भारत की स्वाधीनता हेतु भारत में अथवा भारत के बाहर जहाँ-कहीं भी क्रान्तिकारी गतिविधियों की उन्हें जानकारी मिलती, वे उन्हें भरपूर नैतिक समर्थन देती। मैडम कामा ने विदेशों में भारत के स्वाधीन होने की आकांक्षा को सर्वाधिक प्रचारित किया। उनकी विश्वव्यापी ख्याति देख ब्रिटिश सरकार चिन्तित हो उठी। उनकी जबर्दस्त निगरानी की जाने लगी। परन्तु इन सब बातों की परवाह किए बगैर मैडम कामा ने लन्दन के कैक्सटन हाल में भारतीयों का एक सम्मेलन आयोजित किया जिसमें लाला लाजपत राय, बिपिन चन्द्र पाल, आगा खां एवं गोकुल चन्द्र नारंग आदि भारत के महान नेतागण उपस्थित थे। इस अवसर पर मैडम कामा ने ब्रिटिश सरकार को ललकारते हुए बड़ा ओजस्वी भाषण दिया। उन्होंने कहा, अंग्रेजों को भारत से खदेड़ने के लिए अस्त्र-शस्त्र उठाना कोई अपराध नहीं है क्योंकि एक हिंसक से निपटने का यही उचित तरीका है।

जब इंग्लैंड में ब्रिटिश पुलिस भारतीय क्रान्तिकारियों को अत्यधिक उत्पीड़ित करने लगी तो अन्य क्रान्तिकारी साथियों की सलाह पर मई, १९०६ में मैडम कामा फ्रांस चली गई। अब देखते ही देखते पेरिस स्थित उनका निवास क्रान्तिकारी गतिविधियों का केन्द्र बन गया। पेरिस में उन्होंने प्रसिद्ध क्रान्तिकारी लाला हरदयाल के सम्पादकत्व में सितम्बर, १९०६ से ''वन्दे मातरम्'' पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया।

वन्दे मातरम् की बढ़ती लोकप्रियता से घबड़ाई ब्रिटिश सरकार की शिकायत पर पेरिस में जब इस पत्र के प्रकाशन पर अत्यधिक रोड़े अटकाए जाने लगे तो उसे जेनेवा से प्रकाशित किया जाने लगा। जब यहां भी सख्ती होने लगी तो वह हालैण्ड से प्रकाशित होने लगा।

मैडम कामा भारत के स्वतंत्रता संग्राम से सम्बन्धित क्रान्तिकारी साहित्यों के प्रकाशन में हर प्रकार से सहयोग करती थी। अमर शहीद मदन लाल धींगरा की स्मृति में उन्होंने फरवरी,

शेष पेज ७ पर देखें....

पृष्ठ ६ का शेष.....

१६१० में पहले पेरिस से और उसके बाद बर्लिन से मदन्स तलवार नामक पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। वीर विनायक दामोदर सावरकर द्वारा लिखित महान ग्रन्थ १८५७ का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के प्रकाशन पर ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबन्ध लगा रखा था। कामा ने उस ग्रन्थ को जर्मनी में छपवा कर गोपनीय रूप से उसके वितरण की व्यवस्था की। सभी देशों में उसकी प्रतियाँ पहुँचाई गई। उस ग्रन्थ की एक प्रति मैडम कामा ने प्रसिद्ध रूसी साहित्यकार मैक्सिम गोर्की के पास भी भेजी थी। बाद में भारत में उस ग्रन्थ का अंग्रेजी संस्करण नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने एवं हिन्दी संस्करण महान क्रान्तिकारी शहीद ए आजम भगत सिंह ने गोपनीय रूप से निकालने की व्यवस्था की थी।

ब्रिटिश सरकार ने मैडम कामा के वक्तव्यों एवं पत्रों के भारत आने पर रोग लगा दी। इसके बावजूद उनके पत्र व पार्सल पाण्डेचेरी पहुँच जाते। इस बात से चिढ़ कर ब्रिटिश सरकार ने उन्हें फरार घोषित कर दिया एवं भारत में उनकी लाखों की चल-अचल सम्पत्ति जब्त कर ली।

मैडम कामा मुसीबत में फंसे अपने अन्य क्रान्तिकारी साथियों को बचाने हेतु हर चन्द कोशिश करती थीं। सन् १६१० में वीर सावरकर राजद्रोह के आरोप में लन्दन में गिरफ्तार कर लिए गए। उन दिनों मैडम कामा फ्रांस में थीं। भारत में मुकदमा चलाने हेतु सावरकर पानी के जहाज से भारत ले जाए जा रहे थे। जहाज जब इंगलिश चैनेल के किनारे स्थित फ्रंससके ''मार्सेल्स'' बन्दरगाह के निकट पहुँचा तो पूर्व योजनानुसार सावरकर जहाज से चैनेल में कूद पड़े इधर मैडम कामा एवं वी.वी.एस. अय्यर पहले से ही मार्सेल्स बन्दरगाह से थोड़ी दूर सावरकर को सुरक्षित निकाल ले जाने हेतु तट पर कार लिए खड़े थे। सावरकर स्वयं को बचाते हुए इंग्लिश चैनेल पार कर फ्रांस के तट पर पहुँच तो गए परन्तु फ्रांसीसी सिपाहियों के हाथ पड़ जाने के कारण उन्हें सुरक्षित निकाल ले जाने हेतु की योजना कार्यान्वित नहीं की जा सकी। सावरकर का पीछा करता हुआ जहाज भी किनारे आ लगा। फ्रांसीसी सिपाहियों ने सावरकर को ब्रिटिश अधिकारियों के हाथों सौंप दिया।

योजना की विफलता पर मैडम कामा थोड़ा निराश जरूर हुई, परन्तु हिम्मत नहीं हारी और सावरकर को छुड़ाने की दूसरी कोशिशें करती रहीं। उन्हीं के प्रयास से मार्सेल्स नगर के महापौर ने पूरे मामले की छानबीन की परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। न्यायालय से छुड़ाने हेतु बम्बई के एक प्रसिद्ध वकील की व्यवस्था भी की। दूसरी ओर पेरिस में प्रसिद्ध समाजवादी नेता जार्विस के सहयोग से सावरकर की मुक्ति हेतु आन्दोलन चलाती रहीं।

मैडम कामा नारी जागरण की अग्रदूत मानी जाती थीं। मिस्त्र के राष्ट्रवादी नेताओं के निमंत्रण पर वे मिस्र गई। वहां काहिरा में आयोजित एक राष्ट्रीय सम्मेलन में महिलाओं की अनुपस्थिति देख उनसे रहा न गया। उन्होंने सम्मेलन में मिस्र के राष्टवादियों का आह्वान करते हुए कहा, मैं यहां मिस्र का आधा प्रतिनिधित्व ही देख रही हूँ। मिस्र के सपूतों आपकी माताएं और बहनें कहां है? यह न भूलें कि महिलाओं के बगैर राष्ट्र-निर्माण अधूरा है।

सन् १६१४ में प्रथम विश्व युद्ध छिड़ जाने पर यूरोप मोर्चे पर जाने हेतु जब ब्रिटिश फौज के भारतीय सैनिक भी फ्रांस के बन्दरगाह पर उतरने लगे तो मैडम कामा स्वयं बन्दरगाह पहुँच कर अथवा बाजारों में भारतीय सैनिकों से भेंट कर उन्हें समझाते हुए कहतीं, आप लोग जिनके पक्ष में यह युद्ध लड़ने जा रहे हो उससे भारत माता की बेड़ियां टूटने की बजाय और मजबूत ही होंगी। यह कतई हमारा युद्ध नहीं है।

फ्रांस भी मित्र राष्ट्रों में शामिल था, अतः भारतीय सैनिकों को विद्रोह हेतु संगठित करने का प्रयास करते देख फ्रांस सरकार द्वारा मैडम कामा पर कड़ी नजर रखी जाने लगी।

अन्ततः नवम्बर, १६१४ को मैडम कामा को फ्रांस सरकार द्वारा गिरफ्तार कर पेरिस के निकट विशी के एक पुराने किले में घोर असुविधाओं के बीच चार साल तक नजरबन्द रखा गया। सन् १६१८ में युद्ध की समाप्ति के पश्चात् जब उन्हें रिहा किया गया तो उनका स्वास्थ्य बुरी तरह बिगड़ चुका था। शरीर केवल हड्डियों का ढांचा मात्र रह गया था।

मैडम कामा के अधिकांश साथी जेलों में बन्द थे। घोर आर्थिक संकटों एवं बिगड़ते स्वास्थ्य को झेलते हुए फ्रांस में उन्होंने कई वर्ष बिताए। उनकी गम्भीर बीमारी ने भारत के नेताओं को भी चिन्तित कर दिया। अतः सभी के प्रयासों से सरकार द्वारा उन्हें भारत आने की अनुमति प्रदान कर दी गई। १६३६ में कामा पानी के जहाज से भारत वापस लौटीं, परन्तु जहाज के सफर ने उनके स्वास्थ्य को और झकझोर दिया।

अन्ततः लगभग आठ माह तक बम्बई के एक अस्पताल में रहने के पश्चात् १३ अगस्त, १६३६ को मैडम कामा के नश्वर शरीर का अन्त हो गया। अपना सारा जीवन देश के स्वतंत्रता संग्राम की अलख जगाने में होम कर देने वाली, विदेशों में सर्वप्रथम वन्दे मातरम का उद्घोष करने वाली एवं प्रथम भारतीय राष्ट्रीय ध्वज की सर्जक, अद्भुत क्रान्तिकारी वीरांगना मैडम भीखाइजी कामा की मृत्यु सचमुच किसी शहादत से कम नहीं है। उनकी प्रेरणामयी उत्कृष्ट देशभक्ति को हमारा कोटिशः नमन्।

नं.२ मेंहदी बिल्डिंग
गौतमबुद्ध मार्ग, लखनऊ

256 ईसाईयों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया

ओडिशा एवं झारखण्ड के सीमावर्ती आदिवासी बाहुल्य सुन्दरगढ़ जिले के इन्दरपुर गांव में २५६ ईसाई स्त्री पुरूषों ने यज्ञ में आहुति देकर विधिपूर्वक वैदिक धर्म को ग्रहण किया यह कार्यक्रम उत्कल आर्य सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में श्री स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती एवं पं. विसिकेशन जी शास्त्री ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर आसपास के हजारों श्रद्धालु जन इन्हें आशीर्वाद देने पधारे थे।

आचार्य रणजीत विवित्सु, सचिव
उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

पृष्ठ ३ का शेष.....

सज्जनों को बताना चाहता हूं कि आर्य समाज के लिए सदैव सहर्ष समर्पित कार्यकर्ता के रूप में तैयार होकर पूरे जीवन उसे निभाया। कार्यक्रम पर जाने की तैयारी कर रहे थे हरयाणा के गुरूकुलों के प्रचारार्थ लंबे समय तक प्रचार करते थे । गुरूकुल झज्जर के आचार्य विजयपाल जी ने मंत्री राजवीर सिंह जी के ग्राम में जाना था। सायंकाल तैयारी कर ली बच्चों को कई दिन के कार्य बता दिये और अचानक रात में हृदयगति प्रभावित हो गई तथा भावनात्मक प्रचार करने कहीं दूर चले गये। मुझे प्रातःकाल फोन आया प्रदीप बोल रहा हूँ भैया बोलो पिता जी चल बसे। इतना सुनते ही साश्चर्य समझ ही नहीं पाया। आचार्य दिनेश जी ने पूछा भैया कौन है?क्या घटना हुई?पता करो तब पता चला कि म.आशाराम जी आर्य को रात्रि को हार्ट अटैक हो गया तब अंतिम संस्कार में गये। वहीं पर म.बेगराज जी, पं. वेद प्रकाश जी क्षोत्रिय, पं.कुलदीप आर्य बिजनौर, मोहनलाल आर्य, गुरूकुल के समस्त आचार्यो की उपस्थिति में संस्कार किया गया शोकसभा में श्रद्धांजलि देने वालों में उस दिन समझो प्रांतीय आर्य महासम्मेलन हो रहा था- सर्वश्री स्वामी सुमेघानन्द जी सांसद सीकर, आचार्य विजयपाल जी मुजफ्फरनगर, स्वामी प्रणवानन्द जी गु.गौतमनगर, आ.धनन्जय जी देहरादून, म. बेगराज जी भूडिया, सहदेव बेधड़क, श्री नरेश निर्मल बुढाना, कु. पुष्पा शास्त्री जी, हरयाणा जिला सभा के समस्त अधिकारी एवं प्रांतीय सभा से श्री माया प्रकाश जी त्यागी जैसे नेता, आनन्द प्रकाश जी आर्य हापुड, संयोजन मैंने किया था आदि आदि विद्वानों के विचारों से पता चला कि वे पूरे देश में अपने पुरूषार्थ से वेद प्रचार कार्य कर रहे थे। उनके अभाव को सभी ने स्वीकार किया। म.बेगराज जी सबसे अधिक रोये व दुखी हुए। हमारे लिए तो पारिवारीय क्षति क्षेत्रीय क्षति है सामाजिक रूप में आर्य समाज के लिए ऐसा उत्साही आर्य भजनोपदेशक इस क्षेत्र में आता दिखाई नहीं दे रहा। उनके ३ पुत्र है कुलदीप बड़ा है खेती करता है संदीप सेना में है और प्रदीप आर्य से ही आशा है कि वह पिताजी के अधूरे कार्य को पूरा करने का सामर्थ्य पैदा करे। मैं गुरूकुल परिवार एवं आर्यमित्र परिवार तथा आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि प्रदान करता हूँ।

संचालक
गुरूकुल पूठ- हापुड
६८३७४०२१६२

अशोक कुमार आर्य की माता जी का स्वर्गवास

आर्य समाज सुभाष नगर फैजाबाद के उप प्रधान एवं नगर के प्रतिष्ठित ए.सी.सी. सीमेण्ट डीलर श्री अशोक कुमार आर्य की माता श्रीमती चन्द्रकला आर्या निवासी १६२५ विजय नगर साकेत फैजाबाद का स्वर्गवास विगत २ नवम्बर १५ को हो गया। वह कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रही थी। श्रीमती चन्द्रकला पूर्ण आर्य विचार धारा से ओतप्रोत थी। परिवार में प्रतिदिन यज्ञ किया करती थी तथा आर्य विद्वानों का बड़ा सम्मान, आदर व स्नेह करती थी। इनका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीतिनुसार आर्य विद्वानों द्वारा किया गया जिसमें नगर के इष्ट मित्र एवं संबंधियों ने भाग लेते हुए मृतक आत्मा के प्रति शोक संवेदना व्यक्त किया। आर्य मित्र परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गयी।

शोक संवेदना एवं श्रद्धांजलि

१. आर्य समाज हसुपुर सिम्भावली के प्रधान समरपाल सिंह जी के पिताजी का स्वर्गवास हो गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा में सभामंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती एवं स्वामी अखिलेश्वरानन्द सरस्वती ने जाकर गुरूकुल परिवार एवं सभा की ओर से संवेदना व्यक्त की।

२. आर्य समाज ततारपुर हापुड़ के सदस्य रवीन्द्र कुमार का अचानक हृदयगति रूकने से देहान्त हो गया। वे लगभग ३० वर्ष के थे। सारे क्षेत्र में शोक छा गया। सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने भी घर पर जाकर शोक संवेदना सभा की ओर से व्यक्त की।

३. सहकारी समिति सिम्भावली के लम्बे समय तक अधिकारी रहे चौ. युद्धवीर सिंह जी का ८६ वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे शिक्षा के क्षेत्र में भी सक्रिय रहे। स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने सभा की ओर से अपनी श्रद्धांजली व्यक्त की।

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२४४१/५७ - आर्यमित्र १५ दिसम्बर, २०१५ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४-२०१६-१८

एक प्रति ₹ २.००

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२-
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९८३७४०२१६२, सम्पादक-६५३२.
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

में,

.....

.....

.....

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2015 के चित्र

श्री देवेन्द्रपाल वर्मा-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के श्री योगेश आर्य, श्री विनय आर्य, श्री सुरेश अग्रवाल

सामवेद पारायण यज्ञ एवं जिला आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन

वैदिक पुत्री पाठशाला इण्टर कालेज नई मण्डी, मुजफ्फर नगर मेंदिनांक २३, २४, २५ जनवरी, २०१६ को सामवेद पारायण यज्ञ समय प्रातः ८ से ११ बजेतक का आयोजन किया गया। नित्य सायं ७ से ९ बजे तक भजन व उपदेश होंगे। जिसमें छात्राओं को भारतीय संस्कृति के सही स्वरूप का ज्ञान कराया जायेगा।

२५ जनवरी, २०१६ को ११ बजेसे जिला आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा। जिसकी अध्यक्षता श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. करेंगे। जिले के सभी आर्य कार्यकर्ता भाग लेकर सम्मेलनकोसफल बनायें।

लाला मूल चन्द्र — अध्यक्ष
निरूपमा शर्मा — प्रधानाचार्या
अरविन्द कुमार आर्य — मंत्री

वैदिक पुत्री पाठशाला इंटर कालेज,नईमण्डी, मुजफ्फरनगर

भागसिंह — प्रधान
अरविन्द कुमार आर्य — मंत्री
अरुण कुमार — कोषाध्यक्ष

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा मुजफ्फर नगर

स्वास्थ्य चर्चा-

गुणकारी लहसुन

लहसुन हर घर के रसोई में पाया जाता है। दाल सब्जी की छौंक में इसका प्रयोग होता है। इसकी गन्ध बड़ी तीक्ष्ण होती है। कुछ लोग इसकी गंध के कारण ही इसे खाना पसन्द नहीं करते हैं। लेकिन वे लोग यह नहीं जानते कि लहसुन कितना गुणवान है और इसमें कितने औषधीय गुण समाहित हैं। इसमें एक नहीं अनेक औषधीय गुण विद्यमान हैं और मानव शरीर के लिए परम हितकारी है।

लहसुन जबरदस्त कीटाणुनाशक है। बदबूदार घावों को लहसुन के पानी से साफ करने पर वे जल्दी ठीक हो जाते हैं और दुर्गन्ध भी उनसे आनी बन्द हो जाती है।

दांत दर्द होने पर लहसुन के टुकड़े गर्म करके दर्द वाले दांत पर रखकर कुछ देर तक दबायें,शीघ्र लाभ होता है।

लहसुन का नियमित सेवन करने से जकड़ा हुआ कफ पतला होकर बाहर निकल जाता है।

तहसुन की दो तीन कलियां प्रतिदिन खाने से रक्त की धमनियों की अवरूद्धता दूर होती है, जिससे रक्त का प्रवाह सुचारू रूप से होता है और हृदय रोग से बचाव होता है। एक गांठ लहसुन का प्रतिदिन खाली पेट कच्चा चबाकर खाने से पेट की बीमारियां दूर होती हैं।

पेट में कीड़े हों तो लहसुन की कलियों को छीलकर उन्हें मुनक्का या शहद के साथ खायें तीन-चार दिन तक इसका सेवन करने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

आधे सिर के दर्द में लहसुन को पीसकर सिर में दर्द होने वाले स्थान पर लेप करने पर लाभ होता है।

सरसों के तैल में लहसुन की पांच-छह कलियां पकाकर शरीर की मालिश करने से शरीर स्वस्थ और मजबूत रहता है।

खाना खाने के बाद कच्चे लहसुन की एक दो कलियां छीलकर टुकड़े कर पानी के साथ चबा लें या एक दो बीच निकाली हुई मुनक्का में लपेट कर चबा लें। इससे रक्तचाप दूर होता है। लहसुन ताजा कलियां बढ़े हुए रक्तचाप को कम कर साधारण संतुलित अवस्था में रखने में सक्षम होती है।

लहसुन खाने की कारगर विधि -

प्रातः खाली पेट लहसुन की दो-तीन कलियों को छील लें। फिर हर कली के तीन-चार टुकड़े कर थोड़े पानी के साथ सुबह खाली पेट चबा लें या उन टुकड़ों को पानी के घूंट के साथ निगल लें। इस विधि प्रातः खाली पेट लहसुन की दो-तीन कलियों को छील लें। फिर हर कली के तीन चार टुकड़े कर थोड़े पानी के साथ सुबह खाली पेट चबा लें या उन टुकड़ों को पानी के घूंट के साथ निगल लें। इस विधि से कच्चे लहसुन का सेवन रक्त में कोलेस्टॉल की मात्रा घटाने, रक्तचाप कम करने और ट्यूमर बनने से रोकने में बेजोड़ है।

नेशनल बुक फेयर 17 दिसम्बर से

लखनऊ में आगामी १७ दिसम्बर से २७ दिसम्बर २०१५ तक स्थानीय मोती महल पार्क में लग रहा है। नेशनल बुक फेयर में विभिन्न साहित्यकारों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के स्टाल लगेंगे। जिसमें आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ के सहयोग से एक ''वैदिक साहित्य विक्रय'' का भी स्टाल लगेगा। जिसमें आर्य जगत के विभिन्न विद्वानों द्वारा लिखित साहित्य छूट के साथ उपलब्ध होंगी। समस्त आर्य बन्धु वैदिक साहित्य क्रय करके लाभ उठायें।

-विमल किशोर आर्य
लखनऊ

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।